हमारी परंपरा में हर किसान गोपालक रहा है। भारत में गऊ के बिना किसान ढूंढ़ने से भी नहीं मिलता था। हर किसान के यहां दूध, दही, मट्ठा आदि उपलब्ध होता था। फलस्वरूप, देश में कुपोषण की समस्या का नामोनिशान नहीं था। हमारे देश में दूध बेचने की प्रथा थी ही नहीं।

गोवंश धन-धान्य उत्पादन का आधार था। गोवंश का उदर-भरण उन पदार्थों से होता है, जो मानव के लिए अखाद्य हैं। बूढ़ी गाय और बैल काम लायक न रहने पर भी किसान के लिए बोझ नहीं बनते थे। प्रति बूढ़ी गाय या बैल केवल चारा-पानी पाकर रोज कम से कम 13 कि.ग्रा. गोबर देते हैं। इस गोबर का बायो-गैस संयंत्र में उपयोग करने पर ऊर्जा प्रदान करने वाली गैस तथा उत्तम खाद प्राप्त होती है। मरने पर चमड़ा, हड्डियाँ, सींग और खुर के अलग से दाम मिलते हैं। हड्डियों का चूरा जैविक खाद की शक्ति बढ़ाता है।

जैविक खाद से खेती की प्रति एकड़ उपज भी आधुनिक कृषि से अधिक होती थी, इसके प्रमाण इतिहास में मौजूद हैं। अब विश्व में जैविक कृषि-पद्धति अपनाना प्रारंभ हुआ है।

अपने देश के युवाओं को जैविक कृषि का विश्व के लिए अनुकरणीय नमूना प्रस्तुत करने का अनोखा मौका मिला है।

शुभाकांक्षी -

नानाजी देशमुख

(नाना देशमुख)

प्रिय युवा बंधुओं और बहनों,

स्वतंत्र भारत के संविधान पर अंग्रेजों की शासन-प्रणाली छाई हुई है। अंग्रेजों का प्रशासनिक ढांचा, जो गुलामी में हम पर लादा गया था, उसे उसी रूप में हमने अपने लिए कायम रखा है।

स्वतंत्र भारत का शासन विभेदकारी ''पार्टी डेमोक्रेसी'' के नाम पर चलाया जा रहा है। यदि वस्तुस्थिति को समझें तो हमें अनुभव होगा कि स्वतंत्र भारत की राजनीति गुलामी के काल में अंग्रेजी शासन की नीति के समान ''डिवाइड एण्ड रूल'' की ही कार्बन-कॉपी है।

आजादी के 58 साल में अपवादस्वरूप केवल एक ही देशभक्तिपूर्ण कार्य हुआ है। वह है स्व. सरदार पटेल द्वारा 500 से अधिक देशी रियासतों का भारत में विलीनीकरण। इसके अतिरिक्त 1947 के बाद अपना समाज जातिवाद, भाषावाद, क्षेत्रीयवाद, संप्रदायवाद तथा पार्टीवाद के कारण अधिकाधिक बिखरता जा रहा है। पार्टी आधारित शासन डेमोक्रेसी की विडंबना मात्र है। वह लोकाभिमुखी न होकर गुलामी के काल जैसी सत्ताभिमुखी है।

देश स्वतंत्र होने के बाद सभी पार्टियां आम लोगों को स्वावलंबी व कर्त्तव्यवान बनाने का काम नहीं करती। वे उन्हें हर आवश्यकता पूर्ति के लिए सरकार पर निर्भर रहने के लिए ही उकसाती है। रचनात्मक कार्य करने के स्थान पर गुलामी के दिनों जैसे ही आंदोलन, प्रदर्शन, धरने, हड़ताल और तोड़-फोड़ तक करने के लिए लोगों को भड़काती है। मानो, देश के नवनिर्माण का दायित्व केवल सरकार का है, विरोधी दलों और सामान्य जनों का नहीं है। फलस्वरूप, स्वतंत्र भारत में देशभक्ति एवं सामाजिक कर्तव्य की भावना जगाने का मूलभूत कार्य कोई नहीं कर रहा है। इस कारण, समाज में देशभक्ति की भावना लुप्त हो गई है। क्या यह स्वतंत्र भारत का अपेक्षित वातावरण है?

स्वतंत्रता संग्राम में कठोरतम यातनाएं सहने वाले स्व. जयप्रकाश जी ही एक ऐसे अग्रिम पंक्ति के नेता रहे, जिन्होंने स्वतंत्र भारत में अपने लिए कुछ भी लेना स्वीकार नहीं किया। अंतिम सांस तक वे देश और समाज की उन्नति के लिए लड़ते रहे। पार्टी डेमोक्रेसी भारत के लिए घातक बनेगी, यह उनका सुविचारित मत था।

उन्होंने अपने इतिहास तथा दुनिया भर की शासन-प्रणालियों का गहन अध्ययन कर भारत के लिए 'पार्टीलेस डेमोक्रेसी' को उपयुक्त माना था।

उनके इस सुझाव को किसी भी नेता या पार्टी ने तथा मीडिया ने पसंद नहीं किया। सभी ने 'पार्टीलेस डेमोक्रेसी' की कल्पना को अव्यवहारिक करार दिया। फलस्वरूप, जयप्रकाश जी राजनीतिक क्षेत्र में अनेक वर्षों तक उपेक्षा के शिकार बने रहे। किन्तु वे